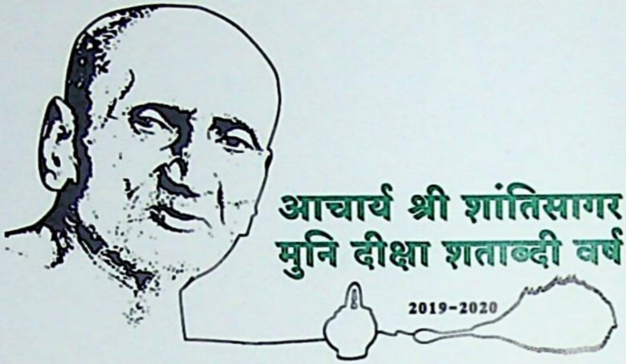
आचार्य श्री शांतिसागर

विधान



रचनाकार

मुनि हितेन्द्र सागर, मुनि चन्द्रगुप्त



चरित्र निर्माण हेतु

चारित्र चक्रवर्ती द्वारा बताए चार

चारित्र सूत्र

रात्रि भोजन न करें, पानी छान कर पीएं।

प्रतिदिन कम से कम 5 मिनिट आत्मचिंतन अवश्य करें।

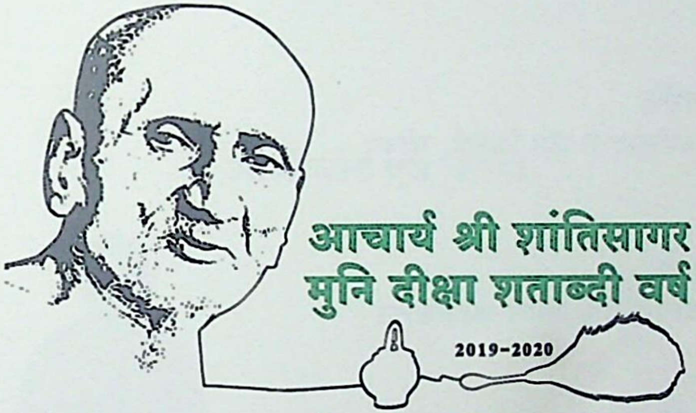
आगम शास्त्रों का स्वाध्याय नियम से करें।

संयम धारण करें।

आशीर्वाद

आचार्य वर्धमान सागर

आओ! शान्ति मार्ग पर चलें



आचार्य श्री शांतिसागर
मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष
2019-2020

संस्करण
आचार्यश्री शांतिसागर मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष 2019–20

संपादक
मुनि श्री सुयशगुप्तजी

रचनाकार
मुनि हितेन्द्र सागर, मुनि चन्द्रगुप्त

मार्गदर्शक
श्री धर्मचन्दजी जैन सिंघई, सीकर

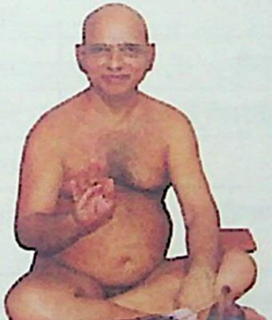
प्रकाशक
आचार्य शान्ति सागर फाउन्डेशन

पुण्यार्जक
श्रीमती पुष्पा देवी – राजकुमार गंगवाल

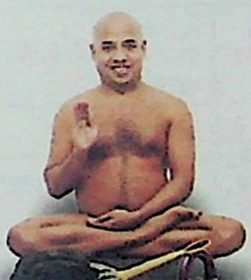
निर्माण कार्य
श्री अजित जैन
पीआर कम्यूनिकेशन्स, जयपुर

आचार्य श्री शान्तिसागर विधान

आशीर्वाद एवं प्रेरणा



परम पूज्य वात्सल्य वारिधि
आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज



परम पूज्य प्रज्ञायोगी
आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

अनुक्रमणिका

'मंगल-भावना'

'ॐ'

२०वीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्र-चक्रवर्ती श्री शान्तिसागर महामुनिराज की दीक्षा के १००वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शताब्दी महोत्सव की आहट सुनाई देने लगी है। उन महामुनिराज के उपकारों से समस्त समाज उपकृत है अतः सभी जन अपनी-अपनी योग्यतानुसार उन महामुनि के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन हेतु तत्पर हो रहे हैं। सबसे अधिक उपकार तो वर्तमान की मुनि-आर्यिका-क्षुल्लक-क्षुल्लिका रूप चतुर्विध संघ के प्रति है जिस कारण आज चतुर्विध संघ के दर्शन समाज को हो रहे हैं।

चारित्र-चक्रवर्ती प्रथमाचार्य श्री शान्ति सागरजी के आचार्य पद दिवस का मंगल उत्सव आश्विन शु. ११ हमारे सम्मुख है। इस पुनीत अवसर पर मुनिद्वय श्री हितेन्द्र सागरजी एवं श्रीचन्द्रगुप्त महाराज ने भक्तिरस से ओतप्रोत "श्री शान्तिसागर विधान" की सुन्दर रचना कर 'गुरुभक्ति' का अवसर सभी को प्रदान किया है। गुरुभक्ति के इस मंगल अवसर का लाभ लेकर पुण्य सम्पादन करें यही भावना है। मुनिद्वय के प्रति हमारी मंगल भावना है।

आ. वर्धमान सा.
१४।१०।२०१८
श्रवणबेलगोल

इस युग के घोषित चक्रवर्ती

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागरजी इस सदी के प्रसिद्ध चक्रवर्ती हुए। वे जन्म से चक्रवर्ती पदवी लेकर नहीं आए। बल्कि अपने त्याग-तप साधना से भगवान आदिनाथ के समान पञ्चम काल में मुनि बनकर सारे भारत में मुनि धर्म का प्रचार-प्रसार किया। आगम सम्मत, निर्दोष मुनिसंघ की पुनर्स्थापना की।

सारे भारत में दिगम्बर जैन मुनियों का भारतीय संविधान सम्मत विहार, जैन धर्म हिन्दु धर्म से अलग है, अवाञ्छितजनों का जैन मन्दिरों में प्रवेश निषेध, जिनवाणी का प्रकाशन, प्रचार-प्रसार आदि ऐसे अनेक क्रान्तिकारी कदम हैं जो उन्हें पञ्चम काल के अघोषित तीर्थंकर और घोषित चारित्र चक्रवर्ती सिद्ध करते हैं। उनके दीक्षा वर्ष के शताब्दी महोत्सव पर हम उनके समान साधना शक्ति व सद्गुण पाने के लिए त्रय भक्ति पूर्वक कोटि-कोटि वन्दन करते हैं।

उनके शताब्दी दीक्षा वर्ष पर परमपूज्य आचार्य भगवंत श्री वर्धमान सागरजी महामुनिराज के परम शिष्य नवोदित श्रमण कवि मुनिश्री हितेन्द्र सागरजी तथा हमारे परम शिष्य युवा कवि हृदय मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी ने चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर विधान लिखकर महनीय कार्य किया है। इसमें ''एक पंथ अनेक काज'' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। अर्थात् विधान के साथ-साथ गुरु-गुणानुवाद उनके व्यक्तित्व अवलोकन के साथ काव्य रस का आनन्द भी मुनि युगल ने सबके लिए कराया है।

गुरु भक्ति के प्रसाद स्वरूप युगल मुनि को गुरु गुणों की प्राप्ति हो। यही उनके लिए प्रतिनमोस्तु सहित शुभाशीर्वाद - शुभाकांक्षा

आचार्य गुप्तिनन्दी

वर्षायोग 2018, नागपुर

संपादकीय

विजित मदन केतुं निर्मलं निर्विकारं,
रहित सकलसंगं संयमासक्त चित्तं।
सुनयनिपुणभावं ज्ञाततत्वप्रपञ्चम्,
जननमरणभीतं सद्‌गुरु नौमि नित्यम्।।

जिन्होंने कामादि विकारों पर जय पाने का पुरुषार्थ किया था, जो निर्मल और निर्विकार थे, समस्त परिग्रहों से रहित थे। जिनका चित्त सदैव संयम में रत था, जो सुनय निपुण थे, तत्त्वों व उनके भावों के ज्ञाता थे, जन्म और मरण के भय से रहित थे। ऐसे सद्‌गुरु चारित्र चक्रवर्ती आचार्य भगवन् श्री शान्तिसागरजी गुरुदेव के चरणों में मेरा सदैव नमस्कार।

बड़े हर्ष की बात है हमारे सहधर्मी मुनि श्री हितेन्द्रसागरजी व मुनिश्री चन्द्रगुप्तजी मुनिराज ने चारित्र चक्रवर्ती **आचार्य श्री शान्तिसागरजी गुरुदेव** के गुणों से प्रभावित हो, उनकी भक्ति व गुणानुवाद निमित्त अपने कवित्व गुण व साहित्य सृजन क्षमता का सदुपयोग करते हुए गुरुजनों के आशीर्वाद से 'आचार्य श्री शांतिसागर विधान' की रचना की है।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी इस कलिकाल में एक महान् आचार्य हुए हैं। आपके गुणों का पार पाना शक्य नहीं है फिर भी मुनिद्वय ने इस लघुकाय विधान में गुरु गुणानुवाद का सफल पुरुषार्थ किया है। श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) के दो वर्षायोगों (वर्ष 2017-2018) में आप दोनों ने दर्शन-ज्ञान-चारित्र व तप आराधना के साथ-साथ मनोयोग से गुरुजनों की सेवा-सुश्रुषा करते हुए जैनागम व संस्कृत भाषा का भी गहन अध्ययन किया है वह इस विधान के पढ़ने से परिलक्षित होता है।

उपरोक्त विधान बहुत ही सुन्दर सरल शब्दों एवं दिव्य भावों को लिये हुए है। जिससे विधानकर्त्ता/आराधकों को पुण्यार्जन के साथ-साथ जिन मार्ग व मुनि मार्ग पर श्रद्धा वृद्धिंगत होगी।

इसके पूर्व भी दोनों मुनिराज अनेक पूजन-विधान-भजन-चालीसा-भक्ति गीत आदि की रचना कर चुके हैं।

आप इसी प्रकार देव-शास्त्र व गुरुजनों की भक्ति/गुणानुवाद व जिनशासन की प्रभावना करते हुए अध्यात्म की ऊँचाइयों को प्राप्त करें। सुचिर काल से सुप्त आत्मज्योति अचिर काल में रत्नत्रय की पूर्णता से प्रदीप्त हो, हमारी आप दोनों के प्रति यही शुभभावना व शुभकामना है।

इस विधान के पुण्यार्जक, मुद्रक व प्रकाशक आदि सभी को शुभाशीर्वाद...

मुनि सुयशगुप्त
(शिष्य - प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव)

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक)
अश्विन कृष्ण दशमी, 4/10/2018
गुरु पुष्यामृत

परम सौभाग्यमावयोः

शान्ति–त्याग–दयामूर्तिं, ध्यान–मूर्तिं महामुनिम्।
शान्ति सिन्धुं महाचार्यं, पूजयावः सुभक्तितः।।

जो शान्ति–त्याग–दया तथा ध्यान की मूर्ति है, ऐसे महान आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनि की हम दोनों (मुनि हितेन्द्रसागर तथा मुनि चन्द्रगुप्त) पूजन करते हैं।

हमारे सातिशय पुण्य की प्रकृतियाँ उदयागत हुई, जिससे कि हमें चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनिराज का गुणानुवाद करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

जीवन के अनमोल क्षण तथा एक स्वर्णिम युग, जब गोम्मटेश बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक महोत्सव के निमित्त से हमारा मिलना हुआ। तथा सन् सत्रह और सन् अठारह के वर्षायोग में वैचारिक आदान–प्रदान के साथ–साथ अनेक सुसंयोग भी प्राप्त हए, जो कि संयमी जीवन की अमूल्य धरोहर स्वरूप है।

उसी श्रृंखला में एक मंगल घड़ी वह आई, जब हमनें मिलकर चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर विधान की परिकल्पना की। यह बात हमने सर्वप्रथम सागर के समान उदार हृदय, जिनमें सदैव वात्सल्य की तरंग प्रत्येक संयमी के लिए सुख प्रदान करने वाली है, ऐसे इस युग के महान आचार्य वात्सल्य वारिधि **गुरुवर श्री वर्धमानसागर जी महाराज** को बताई। तब गुरुवर ने भी प्रसन्न होकर गद्‌गद् भाव से हमें मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया तथा इसी क्रम में परम पूज्य प्रज्ञायोगी **आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव** का भी पावन आशीर्वाद इस विधान हेतु हमारे लिए मंगलमय सिद्ध हुआ। तब हमनें 3 अगस्त 2018, श्रावण कृष्णा षष्ठी, शुक्रवार को श्रवणबेलगोल में स्थित भंडार बसदि में चौबीस तीर्थंकर के पादमूल तथा गोम्मटेश बाहुबली स्वामी की छत्रछाया में शाम 4:45 पर रचना का शुभारंभ किया। यह मंगलकार्य हमारे जीवन में कल्पना से परे था, कि कभी ऐसे जीवन्त आर्षमार्ग की प्रतिमूर्ति पर कुछ लिखने का सौभाग्य प्राप्त होगा और वो भी एक साथ दोनों के द्वारा, अपनी मित्रता–प्रेम को गुरु गुण गीता में समर्पित करने का पावन अवसर।

यथार्थ में ये सब भगवान गोमटेश्वर स्वामी तथा गुरुकृपा का ही प्रसाद है। वर्तमान के चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर महाराज रूपी द्वादशांग को इस छोटी सी स्तुति में कह पाना बहुत ही कठिन था। परन्तु आचार्य भगवंत के आशीर्वाद से और उनकी गुणगरिमा से प्रेरित होकर ही भव्य जीवों को संसार से तिराने वाली यह लघु विद्या निर्मित हो पाई है। तथा 11 अक्टूबर 2018, अश्विन सुदी तृतीया, गुरुवार को रचना कार्य पूर्ण हुआ है।

जिसमें कि सहधर्मी अग्रज पूज्यवर श्री सुयशगुप्त जी मुनिराज ने सरल संपादन द्वारा हमारा उत्साहवर्द्धन किया है। प्रत्येक छंद-अलंकार-सिद्धांत सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करके इस कृति को सुगम बनाया है। साथ ही हमारे संस्कृत विद्यादाता सुशिक्षक श्री विद्वत धर्मचन्द जी सिंघई (सीकर) ने भी संस्कृत तथा सिद्धान्त सम्बन्धी ज्ञान देकर अनेक दोषों को दूर करके इस रचना को निर्दोष बनाया है तथा हमारा उचित मार्गदर्शन किया है।

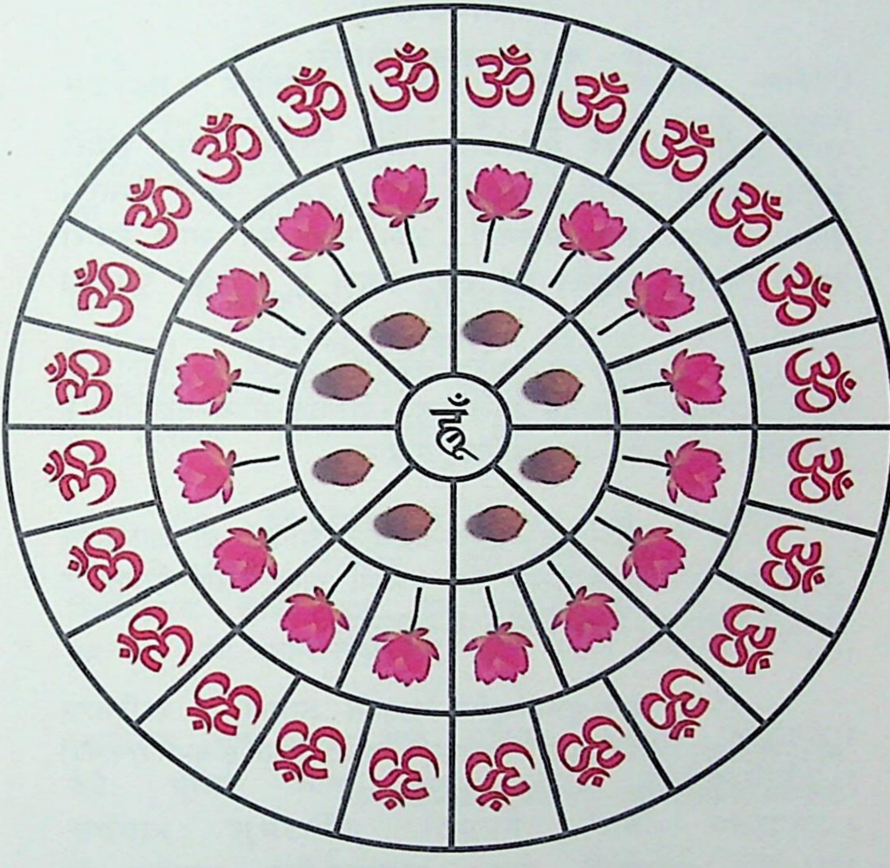
साथ में प्रोत्साहन स्वरूप सहयोग करने के लिए पूज्य मुनिवर श्री अपूर्वसागरजी, अर्पितसागरजी, क्षेमसागरजी, सुप्रभसागरजी, दर्शितसागरजी, चिंतनसागरजी तथा आर्यिका शीतलमतीजी, वत्सलमतीजी, विलोकमतीजी, सम्यक्श्रीजी, सुनीतिमतीजी, सुज्ञानश्रीजी, पूर्णिमामतीजी, देशनामतीजी, महायशमतीजी तथा ब्र. संध्या दीदी, दीप्ति दीदी और पूनम दीदी सभी के लिए हम आभार व्यक्त करते हुए यथायोग्य नमोऽस्तु, प्रति नमोऽस्तु, समाधिरस्तु तथा सद्धर्म वृद्धिरूप मंगल आशीर्वाद प्रकट करते हैं।

पुस्तक सौजन्यकर्त्ता, प्रकाशक, मुद्रक सभी के लिए सद्धर्म वृद्धि आशीर्वाद। प्रस्तुत कृति की सर्व त्रुटियां हमारी हैं तथा जो कुछ भी अच्छाइयां हैं वे सब गुरुजनों के प्रसाद का स्वरूप ही है। पुनश्च चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर गुरुदेव के चरण युगल में सविनय भक्ति-वंदन करते हुए समस्त गुरुजनों के चरणों में नमोऽस्तु।

मुनि हितेन्द्रसागर
(शिष्य - वा. वा. आ. श्री वर्धमानसागरजी महाराज)

मुनि चन्द्रगुप्त
(शिष्य - प्र. आ. श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव)

आचार्य श्री शान्तिसागर विधान मंडल



इस विधान में कुल 48 अर्घ हैं।

1. प्रथम वलय में 8 अर्घ हैं।
2. द्वितीय वलय में 16 अर्घ हैं।
3. तृतीय वलय में 24 अर्घ हैं।

अथ आचार्य श्री शान्तिसागर विधान पूजा प्रारभ्यते

(मत्तगयंद छंद)

(तर्ज – वीर हिमाचल ते निकसि.....)

शांति सरोवर! शांति मुनीश्वर!, शांति जिनेन्द्र समान हमारे।
शांति तपोधन! शांति तपोवन!, शांति मुनीन्द्र महान हमारे।।
शांति निकेतन! शांत महामन!, आन बसो मन आज हमारे।
मस्तक पे सिर अंजुलि को रख, सेवक हे गुरुराज! पुकारे।।

ॐ ह्रूँ परम–पूज्य–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्र! परमधर्म–प्रभावक! सरल–सहज–बालवत्–सौम्य–मुद्रासहित! हे महाश्रमण! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रूँ परम–पूज्य–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्र! वर्धमान शासनस्य सूर्य स्वरूप! नाना–उपसर्ग–विजेता हे महातपोमार्तण्ड! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूँ परम–पूज्य–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्र! चतुरनुयोग पारंगत! दृढ़ संकल्प–शक्ति सहित! हे श्रमण रत्नाकर! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ श्री शांतिसागर स्तुतिः
(शार्दूलविक्रीड़ित छन्द)

सद्धर्मेश्वर शान्तिसागर मुनिः, चारित्र चक्रेश्वरः।
श्री वीरोपवनस्य श्रेष्ठ सुमनः, धर्मध्वजा धारकः।।

आत्मोद्भूत विराग भाव सहितः, रत्नत्रयाराधकः।
तं सूरीश्वर शांतिसागरमहं, वन्दे त्रिभक्त्या सदा।।1।।

(नरेन्द्र छन्द)

सद्धर्मेश्वर शांतिसिंधु गणि, चरित चक्रवर्ती ऋषिवर।
सुमन वीर प्रभु की बगिया के, धर्मध्वजा धारक गुरुवर।।
आत्मोत्पन्न विराग भाव से, रत्नत्रय जो भजते हैं।
हम ऐसे गणि शान्तिसिन्धु को, भक्ति सहित नित नमते हैं।।1।।

श्रीमद् पञ्चमहोत्सवे सुमुनिना, देवेन्द्रकीर्त्या तव।
सर्वारम्भ परिग्रहेण रहिता, निर्ग्रन्थ दीक्षाभवत्।।
शिष्यानुग्रह शक्ति ज्ञान सहितः, वात्सल्य धर्मेश्वरः।
तं सूरीश्वर शांतिसागरमहं, वन्दे त्रिभक्त्या सदा।।2।।

श्रमण श्रेष्ठ देवेन्द्रकीर्ति से, श्रेष्ठ पञ्च कल्याणक में।
सर्वारम्भ परिग्रह विरहित, मुनि-दीक्षा ली गुरु तुमने।।
शिष्योद्धारक शक्ति ज्ञान मय, वत्सल वृष जो धरते हैं।
हम ऐसे गणि शान्तिसिन्धु को, भक्ति सहित नित नमते हैं।।2।।

षट्त्रिंशत् गुण रूप श्रेष्ठ धनिकः, प्रख्यात योगीश्वरः।
देवैः पूजित शील कोष धनदः, कल्याणमूर्तिर्गुरुः।।
सर्वेषाम् शुभदानिषु त्रिभुवने, दानी महादानदः।
तं सूरीश्वर शांतिसागरमहं, वन्दे त्रिभक्त्या सदा।।3।।

गुण छत्तीस स्वरूप धनी जो, जग प्रसिद्ध योगीश्वर हैं।
सुरपूजित व्रत-कोष सुधन के, दाता गुरु श्रेयस्कर हैं।।
सभी दानियों में अतिदानी, महादान जो करते हैं।
हम ऐसे गणि शान्तिसिन्धु को, भक्ति सहित नित नमते हैं।।3।।

नाना सुव्रत साधनाय महती, शक्ति-रमुष्मिन् सदा।
नाना नास्तिक मानवेषु सुखदा, धर्माम्बु वर्षाकरः।।
इन्द्रैः पूजित सर्वशास्त्र विधिना, धर्मध्वजा धार्यते।
तं सूरीश्वर शांतिसागरमहं, वन्दे त्रिभक्त्या सदा।।4।।

व्रत उपवासों को करने की, श्रेष्ठ शक्ति जिनमें बसती।
नास्तिक मनुजों पर सुखदायक, वर्षा करी धरम जल की।।
इन्द्र पूज्य शास्त्रोक्त रीति से, धर्म ध्वजा जो धरते हैं।
हम ऐसे गणि शान्तिसिन्धु को, भक्ति सहित नित नमते हैं।।4।।

(अनुष्टुप्)

शान्तिसिन्धुं सदा स्तुत्वा, हन्यते कर्म सर्वतः।
पूजकस्य हितार्थाय, पादचन्द्रं नमाम्यहम्।।

।। इति श्री शान्तिसागर स्तुतिः ।।

अथाष्टक (मत्तगयंद छन्द)

गजमुख नालमयी घट लेकर, जलवट सिंहमुखी सजवायें।
ये गजकेशरि योग बना हम, श्रीपद में जलधार ढुरायें।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।1।।

ॐ हूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल कोमल पदयुग में हम, निर्मल निर्मल गंध लगायें।
श्रीपद की रज मस्तक पे रख, मस्तक त्रिभुवन का हम पायें।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।2।।

ॐ हूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित चक्र धरा तुमने तब, चारित चक्रवती कहलायें।
अक्षत निर्मित चक्र चढ़ा हम, निश्चित कर्मन् चक्र नशायें।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।3।।

ॐ हूँ परम पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

वीर गुरु अरु चन्द्र गुरु सम, पुष्प खिले गुरु की बगिया में।
पुष्प चढ़ा हम अर्ज करें प्रभु! आन बसो मन की बगिया में।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।4।।

ॐ हूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन जातीय कल्पतरु सम, आकृति नेवज से बनवाई।
दिव्य महार्चन से क्षय हो अब, कर्म क्षुधा अरि की चतुराई।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।5।।

ॐ ह्रूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोघृत पूर्ण शिखातरु[1] से भज, द्वादश अंग मिले सुखदाई।
आरतियाँ कर भाव करें हम, मोहमहांध नशे दुःखदाई।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।6।।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतप योग धरे मुनिराजन, कर्मन् धूल उड़े दिन राती।
धूप चढ़ा पदपूजक को नव-अक्षय-लब्धि रमा मिल जाती।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।7।।

ॐ ह्रूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति सुधाकर शांति सुधारस, शांति सुखामृत पान करायें।
शांति शिरोमणि के पद में हम, श्रेष्ठ हरे फल आज चढ़ायें।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।8।।

ॐ ह्रूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. दीपक

सिद्ध शिला पर सिद्ध विराजत, अष्टम पृथ्वि महासुखकारी।
अर्घ चढ़ाकर सिद्ध बनें हम, आतम सिद्धि मिले दुःखहारी।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।9।।

ॐ हूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

हम शांतिधारा शांतिदा, गुरु के चरण अर्पण करें।
जल भूमिजादिक पुष्प लें, पद-पुष्प में क्षेपण करें।।
श्री शांतिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण-शान्ति प्रदायकम्।
भव-भय अशान्ति निवारकं, गुरु-पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।

शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

प्रथमवलय

अथ प्रथमवलयाष्टकोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छन्द)

आप्त कथित अरिहंत मार्ग को, निरतिचार तुमने पाला।
शीघ्र पहन लोगे गुरुवर तुम, अरिहंतों की गुण माला।।
हे भावी अरिहंत स्वरूपी, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमको भी अरिहंत बना दो, हे गुरु अर्हत्-पथ गामी।।1।।

ॐ हूँ भावि अरिहंत स्वरूप-चारित्र-चक्रवर्ति-आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोघृत पूर्ण शिखातरु[1] से भज, द्वादश अंग मिले सुखदाई।
आरतियाँ कर भाव करें हम, मोहमहांध नशे दुःखदाई।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।6।।

ॐ ह्रूँ परम पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आतप योग धरे मुनिराजन, कर्मन् धूल उड़े दिन राती।
धूप चढ़ा पदपूजक को नव-अक्षय-लब्धि रमा मिल जाती।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।7।।

ॐ ह्रूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति सुधाकर शांति सुधारस, शांति सुखामृत पान करायें।
शांति शिरोमणि के पद में हम, श्रेष्ठ हरे फल आज चढ़ायें।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।8।।

ॐ ह्रूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. दीपक

सिद्ध शिला पर सिद्ध विराजत, अष्टम पृथ्वि महासुखकारी।
अर्घ चढ़ाकर सिद्ध बनें हम, आतम सिद्धि मिले दुःखहारी।।
शांत यतीश्वर शांति मुनीश्वर, हे गुरु! उग्र महातपधारी।
शाश्वत शांति सुखामृत के हित, भक्ति करें हम आज तिहारी।।9।।

ॐ हूँ परम-पूज्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्तिसागर महामुनीन्द्राय अनर्घ-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

हम शांतिधारा शांतिदा, गुरु के चरण अर्पण करें।
जल भूमिजादिक पुष्प लें, पद-पुष्प में क्षेपण करें।।
श्री शांतिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण-शान्ति प्रदायकम्।
भव-भय अशान्ति निवारकं, गुरु-पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।
शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

प्रथमवलय

अथ प्रथमवलयाष्टकोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छन्द)

आप्त कथित अरिहंत मार्ग को, निरतिचार तुमने पाला।
शीघ्र पहन लोगे गुरुवर तुम, अरिहंतों की गुण माला।।
हे भावी अरिहंत स्वरूपी, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमको भी अरिहंत बना दो, हे गुरु अर्हत्-पथ गामी।।1।।

ॐ हूँ भावि अरिहंत स्वरूप-चारित्र-चक्रवर्ति-आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हमें ज्ञात है आप शीघ्र ही, सिद्धाचल बस जाओगे।
लेकिन इतना बतलादो क्या, हमें साथ ले जाओगे?।।
हे गुरु भावी सिद्ध स्वरूपी, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमको भी तुम सिद्ध बना दो, हे गुरु सिद्ध–सुपथ–गामी।।2।।

ॐ हूँ भावि सिद्ध स्वरूप–चारित्र–चक्रवर्ति–आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्यों की परम्परा का, ध्वज तुमने जयवंत किया।
कुनय कुमत मिथ्यात्व रूढ़ि का, नाथ! आपने अंत किया।।
हे महान आचार्य स्वरूपी, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमको पंचाचार सिखा दो, हे आचार्य–सुपथ–गामी।।3।।

ॐ हूँ महान् आचार्य–स्वरूप–चारित्र–चक्रवर्ति–आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूढ़बद्रि के भूयारों से, ग्रन्थ निकलवाये तुमने।
ऐसे श्रुतरक्षक पाठक के, दर्श किये तुममें हमने।।
हे महामुने! पाठक रूपी, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमको द्वादश अंग सिखा दो, हे गुरु पाठक–पथ–गामी।।4।।

ॐ हूँ उपाध्याय–स्वरूप–चारित्र–चक्रवर्ति–आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर तुमने दृढ़ चर्या से, मूलाचार सिखाया है।
दुखकर कलियुग में भी मानो, चौथा काल दिखाया है।।
भावलिंग मय श्रमण–स्वरूपी, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमसे भी मुनिव्रत पलवादो, हे गुरुवर मुनिपथ–गामी।।5।।

ॐ ह्रूँ भावलिंग-सहित-महाश्रमण-स्वरूप-चारित्र-चक्रवर्ति-आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित ये, नाथ! आपके तीन रतन।
इन रत्नों के सम्मुख लज्जित, धन-कुबेर के सर्व रतन।।
हे गुरु रत्नत्रय भंडारी, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमको भी रत्नत्रय दे दो, हे रत्नत्रय-पथ-गामी।।6।।

ॐ ह्रूँ रत्नत्रय-गुण-मंडित-चारित्र-चक्रवर्ति-आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश तप दश धर्म गुप्तित्रय, पंचाचार षडावश्यक।
इन छत्तीस गुणों के धारक, आप चतुर्विध गणनायक।।
हे षट्त्रिंशत गुण के धारी, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमको भी अवगुण से तारो, हे गुरुवर सद्गुण खानी।।7।।

ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशद्-गुण-मंडित-चारित्र-चक्रवर्ति-आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे चारित्र शिरोमणि! तुमने, जीवन को चरितार्थ किया।
चौरासी लख श्रेष्ठ गुणों को, पाने का पुरुषार्थ किया।।
हे चौरासी लख गुण-मंडित, पूज्य शांतिसागर स्वामी।
हमको भी गुणवान बना दो, हे गुरु! सद्गुण-पथ गामी।।8।।

ॐ ह्रूँ चतुरशीति-लक्ष-गुण-मंडित-चारित्र-चक्रवर्ति-आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)
पूर्णार्घ

निक्षेप नय से नाथ तुम, परमातमा के रूप हो।
त्रय रत्न के चलचित्र बन, परमेष्ठी रूप अनूप हो।।
श्री शान्तिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण-शान्ति प्रदायकम्।
भव-भय अशान्ति निवारकं, गुरु-पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।

ॐ ह्रूँ रत्नत्रय-युक्त-नाना गुण-सम्पन्न-पञ्च-परमेष्ठि-स्वरूप-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शांतिधारा शांतिदा, गुरु के चरण अर्पण करें।
जल भूमिजादिक पुष्प ले, पद-पुष्प में क्षेपण करें।।
श्री शान्तिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण शान्ति प्रदायकम्।
भव भय अशान्ति निवारकं, गुरु पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।

शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

द्वितीय वलय

अथ द्वितीय वलय मध्ये षोडशकोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(गीता छंद)

पच्चीस दोषों से रहित, सम्यक्त्व की महिमा बड़ी।
जिसके अमोघ प्रभाव से, हो नष्ट कर्मन् की कड़ी।।
इस दर्श-शुद्धि स्वभाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।1।।

ॐ हूँ दर्शनविशुद्धि-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुल रूप वा सुज्ञान से, हे नाथ तुम संपन्न हो।
निज की प्रशंसा से परे, शुभ विनय गुण से धन्य हो।।
इस विनय गुण के भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।2।।

ॐ हूँ विनय-संपन्नता-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! निज कल्याण में, उत्साह युत गंभीर थे।
निर्दोष व्रत को पालने, वैराग्य-मय अतिवीर थे।।
इस शील व्रत के भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।3।।

ॐ हूँ शीलव्रतेष्वनतिचार-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टाङ्ग शुद्धि सहित महा, ज्ञानाध्ययन गुणखान हैं।
कर्माष्ट विनशाने अहो!, ये आठ मल्ल महान हैं।।
सद्ज्ञान के इस भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।4।।

ॐ हूँ अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसने धरा वैराग्य को, संसार भोग शरीर से।
जिनधर्म में उत्साह की, शिक्षा मिले उस वीर से।।
संवेग के इस भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।5।।

ॐ हूँ संवेग-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकरों के जनक सम, यह मोक्ष मार्ग महान है।
त्रय रत्न मय इस मार्ग का, आधार त्याग व दान है।।
इस त्याग के शुभ भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।6।।

ॐ हूँ शक्तितस्त्याग-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप बाह्य-आभ्यंतर द्विविध, श्री जैनशासन कह रहा।
तप से प्रभावित जीव ही, क्रम से शिवालय[1] बस रहा।।
इस श्रेष्ठ तप के भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।7।।

ॐ हूँ शक्तितस्तप-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतमा में लीन हो, स्वात्मज सुखामृत पान हो।
उस स्वात्म-दृष्टि प्रभाव से, सत्वर[2] स्वपर कल्याण हो।।
इस भाव साधु-समाधि से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।8।।

---

1. मोक्ष 2. शीघ्र

ॐ ह्रूँ साधु–समाधि–भावना–सहित–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मधन हित साधु की, सेवा महान प्रधान है।
इस भाव से श्रीकृष्ण का, तीर्थंकरों में नाम है।।
ये भाव वैयावृत्ति से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।9।।

ॐ ह्रूँ वैयावृत्ति–भावना–सहित–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनभक्ति के माहात्म्य से, हो नष्ट कर्म निधत्ति भी।
बोधि समाधि सुयश मिले, महिमा सुखद प्रभु भक्ति की।
अरिहंत भक्ति भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।10।।

ॐ ह्रूँ अर्हद्–भक्ति–भावना–सहित–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकरों का वचन रस, मति–रूप अंजुलि से पिया।
आचार्य देवों ने तभी, जिनधर्म वृद्धिंगत किया।
आचार्य–भक्ति सुभाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।11।।

ॐ ह्रूँ आचार्य–भक्ति–भावना–सहित–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्वान द्वादश अंग के, बहुश्रुत सहित पाठक महा।
जिनका सतत श्रुतनीर से, सब कर्मकलिमल धुल रहा।
इस श्रेष्ठ बहुश्रुत-भक्ति से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।12।।

ॐ ह्रूँ बहुश्रुत-भक्ति-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर स्वरूप बता रहा, जो तत्त्व द्रव्य पदार्थ का।
ऐसे जिनागम से हमें, सुज्ञान हो परमार्थ का।।
इस श्रेष्ठ प्रवचन भक्ति से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।13।।

ॐ ह्रूँ प्रवचन-भक्ति-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ रत्नत्रय की साधना, आवश्यकों से पूर्ण हो।
आवश्यकों को पाल हम, परमार्थ से परिपूर्ण हों।।
आवश्यकों के भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।14।।

ॐ ह्रूँ आवश्यकापरिहाणि-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म शोधन के लिए, त्रयरत्न ही सहकार्य हैं।
परदोष-निजगुण ढांकना, सुरपूज्य मार्ग प्रभाव है।।
इस श्रेष्ठ मार्ग प्रभाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।15।।

ॐ हूँ मार्ग-प्रभावना-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ख्याति-पूजा-लाभ बिन, गो-वत्स सम प्रीति धरें।
साधर्मियों का प्रेम ये, भव रोग की संतति हरें।।
इस दिव्य वत्सल-भाव से, गुरुदेव! आप महान हो।
हे शांतिसागर! आपको, मेरा विनम्र प्रणाम हो।।16।।

ॐ हूँ प्रवचन-वत्सल-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (गीता छंद)

तीर्थंकरों की मात सम, जग श्रेष्ठ सोलह भावना।
इन भावनाओं से सजी, गुरु! आपकी दृढ़ साधना।।
श्री शान्तिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण-शान्ति प्रदायकम्।
भव-भय अशान्ति निवारकं, गुरु-पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।

ॐ हूँ महान्-पुण्य-प्रकृति-कारक-षोड़श-कारण-भावना-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शांतिधारा शांतिदा, गुरु के चरण अर्पण करें।
जल भूमिजादिक पुष्प ले, पद-पुष्प में क्षेपण करें।।
श्री शान्तिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण-शान्ति प्रदायकम्।
भव भय अशान्ति निवारकं, गुरु-पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।

शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(तृतीय वलय पूजा)

अथ तृतीयवलय मध्ये चतुर्विंशति कोष्ठोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शुद्ध गीता छंद)

(तर्ज – (1) दया कर दान भक्ति का... – (2) किसी के काम जो आये...)

तरण–तारण परम–पावन, चरण गुरुवर तुम्हारे हैं।
यतीश्वर! ये चरण ही तो, हमारे इक सहारे हैं।।
सुगुण–केतन![1] सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।1।।

ॐ ह्रूँ तरण–तारण–चरणाय–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हारे जन्म से पावन, हुई है येलगुल नगरी।
बनी यह दिव्य नगरी ही, जगत में धर्म की मगरी[2]।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।2।।

ॐ ह्रूँ येलगुल–नगरे–अवतार–स्वरूपोत्पन्न–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरममय भोज से सबको, धरम का प्रीतिभोज मिला।
तुम्हारी मातृभूमि बन, वहां सुख का सरोज खिला।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।3।।

ॐ ह्रूँ भोजग्रामस्य–गरिमा–स्वरूप–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. निवास 2. पर्वत

तुम्हारे खेत में पंछी, बिना भय के चुगे दाना।
दया के फलस्वरूप वहां, अधिक सबसे उगे दाना।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।4।।

ॐ हूँ जन्मजात-करुणाभाव-सहित-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण देवेन्द्रकीर्ति से, वरी जैनेश्वरी दीक्षा।
श्रमण के योग्य चर्या से, जगत को दी सुपथ शिक्षा।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।5।।

ॐ हूँ देवेन्द्रकीर्ति-श्रमणस्य-सुशिष्य-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कठिन था दर्श मुनियों का, तथा परतंत्र भारत था।
विषम ऐसे समय में भी, धरा तुमने महाव्रत था।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।6।।

ॐ हूँ विषम-समये-सफल-महाव्रत-साधनकर्त्ता-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरलता नेत्र से झलके, सुमुख से सौम्य रस छलके।
अहो ये योग मणिकांचन, सदा ही आप पर चमके।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।7।।

ॐ ह्रूँ सुभगवदन-सौम्यमूर्तये-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए अभ्यस्त ज्यों गुरुवर, सदा उपसर्ग सहने में।
कथानक आपके प्रेरक, नहीं हम शक्य कहने में।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।8।।

ॐ ह्रूँ नाना-उपसर्गविजेता-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिथिल चर्या निवारण हित, बने तुम शास्त्र का दर्पण।
निरख जिसमें स्वयं को ही, बने निर्दोष सब मुनिगण।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।9।।

ॐ ह्रूँ शिथिलाचार-निवारक-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लिखित श्रुत ताड़पत्रों का, छपा तुमने किया शुभकृत।
प्रकाशित ग्रंथ को पाकर, हुए हम आपसे उपकृत।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।10।।

ॐ ह्रूँ पूर्वाचार्य-लिखित-ग्रंथ-संरक्षक-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाई आपने घर–घर, कुनय मिथ्यात्व की लंका।
जहां देखो वहां तब था, तुम्हारे नाम का डंका।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।11।।

ॐ हूँ कुनय–कुपंथ–रूढ़िस्वरूप–मिथ्यात्व–निवारिणे–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरम से शुष्क भारत की, दशा थी जब मरुस्थल की।
तभी तुमने करी वर्षा, जिनागम मय अमल जल की।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।12।।

ॐ हूँ संपूर्ण–भारत–वर्षे–सद्धर्मवर्षा–कर्त्रे–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परीक्षा आपकी करने, कुनय से ग्रस्त जब आते।
सुगम उत्तर उन्हें दे तुम, सुनय स्वीकार करवाते।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।13।।

ॐ हूँ परवादीभिः अजेय–महातार्किक–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरित सह ज़ान की सम्यक्, जुगलबंदी तुम्हारी थी।
तभी एकांत की सत्ता, सहज तुमने उखाड़ी थी।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।14।।

ॐ हूँ एकांत-पंथ-निवारिणे-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य कमलार्थ हे गुरुवर, बने तुम सूर्य किरणों सम।
अनेकों इन्द्रभूति को, बनाया आपने गौतम।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।15।।

ॐ हूँ नास्तिकजीवेष्वपि-तत्वार्थश्रद्धारोपक-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिगंबर साधुओं का जब, भ्रमण रोका प्रशासन ने।
करी तब क्रांति दिल्ली में, झुकाया सिर कुशासन ने।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।16।।

ॐ हूँ राजधानी-दिल्ली-महानगरे-धर्मक्रान्तिकर्त्ता-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हारे पुण्य से गुरुवर, हुआ ऐसा उजाला था।
जहां भी हाथ डाला था, वहां सोना निकाला था।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।17।।

ॐ हूँ अलौकिक-पुण्यपुरुष-स्वरूप-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनेश्वर वीर के युग में, हुए आचार्य जो सारे।
उन्हीं के मध्य तुम गुरुवर, चमकते श्रेष्ठ ध्रुव तारे।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।18।।

ॐ हूँ महावीर-शासन-मध्ये-युगाचार्य-स्वरूप-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं थी नाम की इच्छा, नहीं था भाव ख्याति का।
तभी तो चल रहा अब भी, तुम्हारे नाम का सिक्का।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।19।।

ॐ हूँ यश-ख्याति-लोकेषणा-रहिताय-महाकीर्तिवान्-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्हवन नर नारी कृत प्रभु का, हुआ पंचामृतों से जब।
जिनागम की सभी विधि का, किया तुमने समर्थन तब।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।20।।

ॐ हूँ आर्ष-मार्ग-पोषक-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रमण के मध्य तुम चंदा, तुम्हारा संघ नभमंडल।
वीर चन्द्रादि मुनियों का, जहां था सप्त ऋषिमंडल।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।21।।

ॐ ह्रूँ मुनि–आर्यिकादि–चतुर्विध–संघनायक–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं ममता रखी तन से, नहीं समता तजी मन से।
महोत्सव मृत्यु का करके, गये गुरु दूर तुम हमसे।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।22।।

ॐ ह्रूँ उत्तम–समाधि–साधक–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तुति के योग्य गुरु तुमको, भुला कोई न पायेगा।
स्मरण कर आपकी स्मृतियाँ, हृदय ये भीग जायेगा।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।23।।

ॐ ह्रूँ सर्वजन–स्तुत्य–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हारे नाम के पन्ने, सदा इतिहास में होंगे।
कथानक आपके सबके, सुमुख पर गीतवत होंगे।।
सुगुण केतन! सुभग चेतन!, यतीश्वर शान्तिसिन्धु श्रमण!।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं अहो भगवन्।।24।।

ॐ ह्रूँ इतिहास–पुरुष–स्वरूप–चारित्र–चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)
पूर्णार्घ

चारित्र चक्री! आपने, चरितार्थ जीवन कर दिया।
उस चक्र से सुर शक्र का, गुरु आपने मन हर लिया।।
श्री शान्तिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण शान्तिप्रदायकम्।
भव-भय अशान्ति निवारकं, गुरु-पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।

ॐ हूँ सरल-सहज-अचिन्त्य-गुणनिधि-स्वरूप-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

जिनधर्म की मुकुटाग्र मणि, गुरु शांति सिंधु महान् हो।
तुम नाम के अनुरूप ही, सुख शांति के वरदान हो।।
शुभ ज्ञान से शुभ ध्यान से, शुभ नाम से तुम श्रेष्ठ हो।
इस काल में मुनि संघ के, चक्रेश सम तुम ज्येष्ठ हो।।1।।

कर जोड़कर अब आपसे, सविनय यही इक प्रार्थना।
हे नाथ! हम भी कर सकें, तुम सम सफलतम साधना।।
श्री शान्तिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण-शान्ति प्रदायकम्।
भव-भय अशान्ति निवारकं, गुरु पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।2।।

ॐ हूँ जगन्मान्य-मुनिवराय-जगत्-प्रसिद्ध-सिद्ध-पुरुषाय-चारित्र-चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जलादि पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम शांतिधारा शांतिदा, गुरु के चरण अर्पण करें।
जल भूमिजादिक पुष्प ले, पद पुष्प में क्षेपण करें।।
श्री शांतिसागर ऋषिवरं, संपूर्ण शान्ति प्रदायकम्।
भव-भय अशान्ति निवारकं, गुरु पदयुगं प्रणमाम्यहम्।।

शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र :- ॐ हूँ आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा :- जयमाला हम पढ़ रहे, बजा बजा कर ढोल।
गुरु गुण गाकर खोल दे, पाप करम की पोल।।

जोगीरासा छन्द
(तर्ज – माँईन माँईन ....)

हे गुणसागर! गुण रत्नाकर, हम तेरे गुण गाएं।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।

जिनशासन का सूरज माता, सत्यवती उपजाये।
भरतवर्ष का अनुपम गौरव, दक्षिण भारत पाये।।
धन्य येलगुल मातुलगृह जो-2, जन्मभूमि कहलाये।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।1।।

भोजग्राम की पावन वसुधा, गुरुवर के गुण गाती।
शान्तिदूत शान्तिसागर की, मातृभूमि कहलाती।।
सौम्य बाल-छवि सुन्दर जिनकी-2, जन-जन के मन भाये।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।2।।

जैसे नभ में तारागण संग, चंदा चम-चम चमके।
वैसे आप अनेक गुणों संग, वैरागी बन दमके।।
सबको मोहित करने वाले-2, मोहजाल विनशाये।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।3।।

ग्राम येलगुल जन्म हुआ हैं अरु यरनाल सुदीक्षा।
बन आचारज समडोली में, देते दीक्षा-शिक्षा।।
भारत भर में घूम-घूमकर-2, धर्म ध्वजा फहराये।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।4।।

दुष्ट फिरंगी शासन ने जब, संविधान बनवाया।
जैन दिगम्बर सब मुनियों का, देश भ्रमण रुकवाया।।
तब ये शान्तिदूत महामुनि-2, क्रान्तिदूत कहलाये।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।5।।

गये चांदनी चौक गुरुवर, साथ श्रमण-गण को ले।
बैठे बीच शहर अनशन कर, अंग्रेजों से बोले।।
ये कानून मिटे ना जब तक-2, तब तक हम ना जायें।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।6।।

तब सरकार ब्रिटिश दिल्ली की, ऐसे थर-थर कांपे।
जैसे बिजली टूट पड़ी हो, उन पर नभ से आके।।
तब वो बोले नग्न मुनिगण-2, चाहे जहां भी जायें।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।7।।

शोभा सुन्दर चैत्यालय की, संघ आपके न्यारी।
पंचामृत धारा प्रभुवर पर, जहां करे नर-नारी।।
आगमोक्त पूजन विधि के तुम-2, अनुमोदक कहलाये।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।8।।

बजा-बजाकर धर्मशंख को, कुन्थलगिरि में आये।
सजा-सजाकर तप से निज को, मरण-समाधि पाये।।
फिर भी गुरुवर नाम तुम्हारा-2, अजर-अमर कहलाये।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय-जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।9।।

शांति सुधाकर शांति प्रभाकर, शांतिसागर जी न्यारे।
कैसे तव गुण गीता गाएं, अल्पबुद्धि हम सारे।।
'मुनि हितेन्द्र अरु चन्द्रगुप्त की-2', मैत्री अमर कहाये।
शांति-सिंधु ऋषिराज! आपकी, जयमाला हम गाएं।।
जय-जय जय शांतिसागर, जय-जय-जय गुण रत्नाकर।।10।।

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ति आचार्य श्री शांतिसागर महामुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सुन्दर छवि गुरुदेव की, देती तप उपदेश।
गुरुवर ये वर दो हमें, धरे दिगम्बर वेष।।
वर्धमान चारित्र का, दो हमको वरदान।
तीन गुप्ति शिवराज से, कर देना धनवान।।
मुनि 'हितेन्द्र सागर' सहित, 'चन्द्रगुप्त' तव दास।
करो कृपा हम पर गुरो, शीघ्र मिले शिववास।।

अथ विधान प्रशस्तिः
(नरेन्द्र छन्द)

पंच-परम परमेष्ठी प्रभु को, हम दोनों का नित वन्दन।
करें नमन माँ वरदा तुमको, हम दोनों तेरे नन्दन।।
चन्द्रप्रभु को शान्ति नाथ सह, हृदय कमल पर पधरायें।
बाहुबली को वंदन कर हम, शांति सिंधु के गुण गाएं।।

जीर्ण हुई मुनि परम्परा का, जीर्णोद्धार किया गुरु ने।
सदी बीसवीं में अति उत्तम, पद आचार्य वरा उनने।।
ऐसे गुरु के सच्चरित्र का, हम कैसे गुणगान करें।
सोचा क्यूं ना हम दोनों मिल, इक विधान निर्माण करें।।

इस विधान द्वारा हम दोनों, गुरु गुण गीता गाते हैं।
क्रमपूर्वक हम दोनों अपनी, गुर्वावलि बतलाते हैं।।
चरित चक्रवर्ती सूरीश्वर, पूज्य शांतिसागर ऋषिवर।
इसी पट्ट पर वीर सिंधु वा, शिव धर्माजित योगीश्वर।।

पंचम पट्टाधीश सूरिवर, वर्धमान सागर स्वामी।
मेरे जीवन निर्माता गुरु, मुनि दीक्षा–शिक्षा दानी।।
जिनने मुझको नाम दिया है, मुनि हितेन्द्रसागर हितकर।
अब अपनी गुर्वावलि बोले, चन्द्रगुप्त मुनिवर सुखकर।।

आदि सिंधु गुरु के लघुनंदन, महावीरकीर्ति गुरुवर।
उनके नंदन अरु प्रतिनंदन, कुंथु कनक गुरु श्रमणेश्वर।।
उसी वंश में गुप्तिनंदि गणि, दीक्षा–शिक्षा गुरु मेरे।
जिनका आशीर्वाद सुमंगल, रहता साथ सदा मेरे।।

इन सब गुरुओं की अनुकंपा, हम पर अति सुखकारी है।
श्रेष्ठ शांतिसागर विधान की, हुई संरचना न्यारी है।।
धर्माग्रज मुनि सुयशगुप्तजी, सरल सहज संपादक हैं।
धर्मचन्द विद्वत इस कृति के, निर्देशक पथदर्शक हैं।।

तीन अगस्त अठारह सन् को, श्री गणेश इस कृति का कर।
ग्यारह अक्टूबर को मंगल, हुई इतिश्री अतिसुखकर।।
जब तक पावन भरत क्षेत्र में, अग्नि तथा सुवरण होवे।
तब तक पूजक के हितार्थ ये, शांति–सिंधु अर्चन होवे।।

दोहा

श्रवणबेलगोला जहां, चौबीसी जिनधाम।
जिनके पद सानिध्य में, इस कृति का निर्माण।।
मुनि हितेन्द्र सागर तथा, चन्द्रगुप्त के नाथ।
हमको हे गुरु भेजिये, उर्ध्वलोक के माथ।।

इति प्रशस्तिः

अर्घ्यावलि

चारित्रचक्रवर्ती प्रथमाचार्य शान्तिसागरजी का अर्घ्य

विंश सदी के तपोनिधि, आद्य गुरुवर आप हो,
चारित्रचक्री शान्तिसागर, धर्म के आधार हो।
छत्तीस दिन संन्यास ले, मुनिधर्मफल-महिमा कही,
शुभ अर्घ्य तव चरणों चढ़ाकर पाऊँ शिवपुर की मही।। 1 ।।

ॐ ह्रीं प्रथमाचार्य श्री शान्तिसागरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्रचूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी अर्घ्य

चारित्र-चूड़ामणि मुनीश्वर, प्रथम पट्टाधीश हो,
श्री वीरसागर सूरिवर तुम, सब गुणों के ईश हो।
जलफलादिक अर्घ्य लेकर, पद-कमल, पूजा करूँ,
भवताप का सन्ताप मेटो, शीघ्र ही शिवसुख वरूँ।। 2 ।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री वीरसागरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धान्त संरक्षक आचार्यश्री शिवसागरजी का अर्घ्य

चारित्रशिरोमणि शिवसागर गणि दूजे पट्टाधीश गुरो!
भवतापनिवारक हे अनुशाक बिनकारण जगबन्धु विभो!
शुभअर्घ्य संजो कर, कनकथाल भर, अग्र चढ़ाऊँ शरण गही,
भवरोग मिटादो, ज्ञान बढ़ा दो, निजपद पाऊँ भाव यही।। 3 ।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री शिवसागरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मशिरोमणि आचार्यश्री धर्मसागरजी का अर्घ्य

तीजे पट्टाधीश मुनीश्वर, धर्मसिन्धु आचार्य अहो,
धर्मखानि चारित्ररत्न हो, धर्मध्वजा की शान अहो।
जलफलादि वसु द्रव्य संजो कर, चरणकमल में अर्घ्य दिया,
आधि-व्याधि-उपाधि मिटाने को गुरुवर का शरण लिया।। 4 ।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री धर्मसागरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी आचार्यश्री अजितसागरजी का अर्घ्य

चौथे पट्टाधीश अजितसागर मुनि,
चारितपुंगव आप महागुण के धनी।
जल फलादि वसु अर्घ्य बना पूजूँ सदा,
आतम अनुभव अनुपम सुख हो सर्वदा।। 5 ।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री अजितसागरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमानसागरजी का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत चरु दीपक धूप फूल फल लाऊँ,
वैभव अतुल अनन्त गुणों का पाऊँ, अर्घ्य चढ़ाऊँ।
वर्धमान आचार्य शिष्य हो, धर्मसिन्धु मुनि-ईशा,
अजितसूरी के आदेशों से, पंचम पट्टाधीशा।। 7 ।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री वर्धमानसागरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतनिधि आचार्यकल्प श्री श्रुतसागरजी का अर्घ्य

जल चंदन अक्षत आदिक सब अर्घ्य अखण्ड बनाऊँ
चरण कमल में अर्पित करते, भवसागर तर जाऊँ।।
श्रुतसागर आचार्यकल्प मुनि, तुम हो तत्त्व प्रकाशी।
मन-वच-तन जो पूज रचावे, मेटे भव की फाँसी।। 6 ।।

ॐ ह्रीं आचार्य श्री कल्पश्रुतसागरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य परमेष्ठी का अर्घ्य

पञ्चाचारपरानकिञ्चनपतीन् नश्यत्कषायाश्रमान्।
चञ्चज्ज्ञानबल-प्रजाञ्चित-महा-पञ्चास्तिकाय-स्थितीन्।
स्फाराचञ्चलयोग-चञ्चुरधियः सूरीनुदन्चद् गुणान,
अञ्चामो भवदुःखसञ्चयभिदे भक्ति-क्रिया-चुञ्चवः।।
नीर-गन्धाक्षतैः पुष्प-नैवेद्यकैः,
दीपकैश्च धूपकैश्च बहुफलैर्यजाम्यऽम्।
शान्ति-वीर-शिवसमुद्र-धर्मसागरान् सदा,
आचार्य-सार्वभौम-अजितसागरान् मुदा।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्त्रिंशत् गुणमण्डित आचार्य श्री शान्तिवीरशिवधर्माजित सकल पूर्वाचार्येभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरती

तर्ज – मीठो–मीठो बोल.....

जगमग दीप सजाकर के, आये मिल के हम आये मिल के।
आरती वाद्य बजाकर के, गाएं मिल के हम गाएं मिल के।।
शान्तिसागर गुरुवर तेरी, श्रद्धा के दीप जलाकर के।
जगमग दीप सजाकर के, आये मिल के हम आये मिल के।।

सत्यवती माता के बनकर लाल, सत्य राह अपनाई मुनिव्रत पाल।
बिगुल बजाया जैन धर्म का आप, जिनको सुनकर नश जाते सब पाप।।
कीर्तन करें, नर्तन करें – कीर्तन करें, नर्तन करें।
गुरुवर की आरती हम करें, रत्नों के दीप सजाकर के।
जगमग दीप सजाकर के, आये मिल के हम आये मिल के।।1।।

शांत छवि गुरुवर तेरी मनहार, सबको देती सुख शांति उपहार।
आरती लेकर करने जय जयकार, आये हम शान्तिसागर के द्वार।।
वंदन करें, अर्चन करें – वंदन करें, अर्चन करें।
गुरुवर की आरती हम करें, ढपली और ढोल बजाकर के।
जगमग दीप सजाकर के, आये मिल के हम आये मिल के।।2।।

चम–चम चमके ये दीपों का थाल, जैसे नभ में चमके सूरज–चांद।
आरती कर हम बन जायें गुणवान, गुरुवर हमको दो ऐसा वरदान।।
विनती सुनो, अरजी सुनो – विनती सुनो, अरजी सुनो।
गुरु! 'चन्द्रगुप्त' को तार लो, ये जीवन सुलभ बनाकर के।
जगमग दीप सजाकर के, आये मिल के हम आये मिल के।।

।। जय शान्तिसागर ।।

रचनाकार – मुनि चन्द्रगुप्त
(शिष्य – प्र. आ. श्री. गुप्तिनंदीजी गुरुदेव)

आरती

तर्ज – बाहुबली स्वामी जगकेल्ल स्वामी...

शांतिसागर स्वामी, युग के हो स्वामी।
आरती करते हम, हर लो हमारा मोहतम।।

सत्यवती माता, पिता भीमगौंडा।
कर्नाटक भोजग्रामे, सातगौंडा रूपजन्में–2।।1।।
शांतिसागर स्वामी......

उपसर्ग विजेता, जैनागम वेत्ता।
परिषह में समता, देह में तजी ममता–2।।2।।
शांतिसागर स्वामी......

अन्न जल त्यागा, सिंह सम लागा।
उत्तम समाधि करी, सिद्ध क्षेत्र कुंथलगिरि–2।।3।।
शांतिसागर स्वामी......

सुचरित चंदा, जिनधर्म झंडा।
लोकहित फहराया, अचिन्त्य दिखलाया–2।।4।।
शांतिसागर स्वामी......

निज समकारी, गुप्तित्रय धारी।
चिंतन हितकारी, मम संकट हारी–2।।5।।
शांतिसागर स्वामी......

निज सम कीजिए, सिद्ध पद दीजिए।
'चिंतनसागर' विनती करें, नित गुरुभक्ति करें–2।।6।।
शांतिसागर स्वामी......

रचनाकार – मुनि चिंतनसागर
(सं. शि. – वा.वा.आ. श्री वर्धमानसागरजी महाराज)

आरती

तर्ज – मैंने पायल जो छनकाई...

हमने मणिमय थाल सजाया।
जगमग जगमग दीप जलाया।।
करने आरती हम सब आज।
होऽ गुरुवर–शांतिसागर महाराज, होऽऽ गुरुवर–शांतिसागर महाराज

धन्य माँ सत्यवती हैं, पिता भीमगौंडाजी हैं।
भोज शुभ मातृभूमि हैं, होऽ गुरुवर होऽऽ... धन्य माँ...
गुरु ने आगम राह दिखाई।
संयम तप की ज्योत जलाई।।
करने आरती हम सब आज।।1।। होऽ गुरुवर–शांतिसागर महाराज...

प्रथम आचार्य तपोधन, किया सबको संबोधन।
प्रभु सम कलियुग में तुम, होऽ गुरुवर होऽऽ... प्रथम...
हमने ढम ढम ढोल बजाया।
ता थइ ता थइ नृत्य रचाया।।
करने आरती हम सब आज।।2।। होऽ गुरुवर–शांतिसागर महाराज...

शुभाशीष जो मिल जाये, जहर अमृत बन जाये।
सर्प भी नत हो जाये, होऽ गुरुवर होऽऽ... शुभाशीष...
गुरु के चरण कमल सुखदाई।
आरती करने 'पूनम' आई।
करने आरती हम सब आज।। होऽ गुरुवर–शांतिसागर महाराज...

रचयित्री – बा.ब्र. पूनम दीदी
(सं. शि. – वा.वा.आ. श्री वर्धमानसागरजी महाराज)

परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर चालीसा

दोहा

श्रमण शांतिसागर हुए श्रमणाचार्य महान्।
दिखलाई कलिकाल में चर्या वीर समान।।
चक्रवर्ती चारित्र के शांति सिंधु यतिराज।
चालीसा हम गा रहे दीप धूप के साथ।।

जयति शांतिसागर गुरुराई, आत्म शांति दायक सुखदाई।
जिनकी मंगल गौरव गाथा, जो भी गाता वह तिर जाता।।1।।

ग्राम येलगुल जन्म लिया है, भारत भू को धन्य किया है।
सत्यवती तुम मात कहाये, पिता भीमगौण्डा कहलाये।।2।।

नाम सातगौण्डा शुभ पाया, पाटिल कुल का यश चमकाया।
एक बहन और तीन सुभ्राता, प्रेम प्रीत का सबसे नाता।।3।।

मात-पिता की सेवा करते, न्याय-नीति से उद्यम करते।
बचपन से थे करूणाधारी, पशु-पक्षी पर भी उपकारी।।4।।

जिन दीक्षा का भाव बनाया, गुरु देवेन्द्र कीर्ति को पाया।
उनसे क्षुल्लक पद को पाया, क्रम पूर्वक मुनि पद भी पाया।।5।।

गुरुवर तुम थे श्रेष्ठ तपस्वी, धीर वीर गम्भीर मनस्वी।
मूलोत्तर गुण पालन करते, शांत भाव से सहज विचरते।।6।।

आगम के थे दृढ़ श्रद्धानी, शुभ चिंतनरत अनुभव ज्ञानी।
सर्पादिक उपसर्ग विजेता, गुरुवर तुम हो परिषह जेता।।7।।

पंचामृत अभिषेक हमेशा, देखा करते आप मुनीशा।
जन-जन को सन्मार्ग बताया, मिथ्यामत पाखण्ड हटाया।।8।।

जिनशासन का स्वच्छ बगीचा, महाव्रतों से तुमने सींचा।
वीर-पाय चन्द्रादिक प्यारे, नेमि-कुन्थु सब शिष्य तुम्हारे।।9।।

तीर्थाटन के भाव बनाये, श्री सम्मेद शिखरजी जाये।
दक्षिण उत्तर भ्रमण किया था, मुनि चर्या का बोध दिया था।।10।।

संघ सहित आये गुरुराई, नगर-गांव में खुशियां छाई।
दिल्ली में गुरुदेव पधारे, भक्त खुशी से चरण पखारे।।11।।

चौक चांदनी खड़े फिरंगी, मुनि विचरण पर की पाबंदी।
बैठ वहां पर सप्तऋषि ने, महाक्रांति कर दी दिल्ली में।।12।।

देख फिरंगी फिर घबराये, मुनि विहार से रोक हटाये।
नग्न दिगम्बर साधु सच्चे, जहां कहीं भी आ जा सकते।।13।।

गुरुवर मूढ़बद्री में आये, श्रुत ग्रन्थों के दर्शन पाये।
ग्रन्थ निकालो इन्हें छपाओ, सत्पात्रों के कर पहुंचाओ।।14।।

भट्टारक जी ने ना मानी, गुरुवर ने अनशन की ठानी।
हुई प्रकाशित फिर जिनवाणी, अमर रहे जिनवर की वाणी।।15।।

सन सैंतालीस की थी घटना, घटना क्या मानो दुर्घटना।
अवांछित जन मंदिर जाये, शासन यह आदेश सुनाये।।16।।

करने को संस्कृति की रक्षा, अन्न त्याग की करी प्रतिज्ञा।
दिन ग्यारह सौ पांच चली थी, जिन भक्तों को विजय मिली थी।।17।।

धवल ग्रन्थ ताम्रांकित कीना, कई हजार अनशन भी कीना।
गुरुवर के सत्कार्य अनेकों, गुरुवर के उपकार अनेकों।।18।।

अन्त निकट जब अपना जाना, सल्लेखन का मन में ठाना।
कुन्थलगिरी में गुरुवर आये, नित सिद्धों को गुरुवर ध्याये।।19।।

जाते-जाते सुन लो प्यारो, डरो नहीं तुम संयम धारो।
अंतिम यह संदेश दिया था, भव्यों पर उपकार किया था।।20।।

अनशन दिन छत्तीस किया था, मृत्यु महोत्सव साध लिया था।
'सुयशगुप्त' नित शीश झुकायें, तुम सम गुण को हम भी पायें।।21।।

दोहा

नित प्रातः उठ जो करे, गुरुवर के गुणगान।
बोधि समाधि प्राप्त हो, बन जाये गुणवान।।
'सुयशगुप्त' नित आपके, चरणन करे प्रणाम।
आध्यात्मिक शांति मिले, शीघ्र मिले शिवधाम।।

रचनाकार – मुनि श्री सुयशगुप्तजी
(शिष्य – प्र. आ. श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव)

भजन
शांति के सागर
(तर्ज – मुझे ऐसा वर दे दो...)

शांतिसागर गुरुवर, शांति के सागर हो।
गुणगान करुँ तेरा, तुम गुण रत्नाकर हो।।

इस कलियुग में तुमने, मुनि मार्ग चलाया है।
मुनि चर्या पालन कर, जिन धर्म बढ़ाया है।। जिन धर्म...
सन्मार्ग पथिक गुरुवर, सन्मार्ग दिवाकर हो।
गुणगान करुँ तेरा, तुम गुण रत्नाकर हो।। शांतिसागर...

चारित्र चक्रवर्ती, चारित्र शिरोमणी हो।
वात्सल्य मूर्ति गुरुवर, संयम चूड़ामणि हो।। संयम...
है धन्य तेरी महिमा, करुणा के सागर हो।
गुणगान करुँ तेरा, तुम गुण रत्नाकर हो।। शांतिसागर...

दक्षिण के सूरज बन, तुम ज्ञान किरण देते।
उत्तर के चन्दा बन, मिथ्यामत हर लेते।। मिथ्यामत...
सारे जग में न्यारे, तुम ज्ञान प्रभाकर हो।
गुणगान करुँ तेरा, तुम गुण रत्नाकर हो।। शांतिसागर...

ऐसे शांति सिंधु हमें, आतम शांति दो।
जो आतम दीप बने, ऐसी तप ज्योति दो।। ऐसी...
वर 'चन्द्रगुप्त' को दो, तुम सा गुणसागर हो।।
गुणगान करुँ तेरा, तुम गुण रत्नाकर हो।। शांतिसागर...

रचनाकार – मुनि चन्द्रगुप्त
(शिष्य – आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव)

आद्य गुरु वन्दन

श्रमणों के हो
आद्य गुरु
इस युग में कहाये
तुम्हें पा धन्य हुए
जागे भाग्य हमारे।

वैसे तो सूर्य का
उदय होता पूरब से
पर इस श्रमण सूर्य का
उद्भव हुआ
भारत भू के
दक्षिण से

जिसके प्रकाश से
खिल उठी
मुरझाई श्रमण लता
हुआ निर्दोष चर्या
का सुप्रभात

दिया सबको उपदेश
चल कर महाश्रमण
महावीर के पथ पर

बन अमृत जल
पुनः जीवित किया
मृत प्रायः
मुनि परम्परा के
वट वृक्ष को

ऐसे महामुनि
प्रथम आचार्यवर्य
जो कि
कहाये चारित्र चक्रवर्ती
श्रमणोद्धारक
आगमरक्षक

शांति के सागर
हे आद्य गुरु!
तुम्हें नमन
हे श्रमणोद्धारक!
तुम्हें प्रणाम
हे श्रमण सूर्य शान्तिसागर!
हो तुम्हें शत-शत
वन्दन, अभिनन्दन।।

मुनि सुप्रभ सागर
(संघस्थ शिष्य - आचार्य श्री
वर्धमान सागर जी महाराज)



20वीं सदी के प्रथमाचार्य परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती प्रात: स्मरणीय 108 श्री श्री शान्तिसागरजी (दक्षिण) का जीवन परिचय

जन्म	–	आषाढ़ कृ.6 वि.सं. 1929 ईस्वी 1872, बुधवार।
जन्मस्थान एवं नाम	–	येलगुल (भोजग्राम), कर्नाटक, सातगौंड़ा पाटील (जैन)।
माता-पिता	–	श्रीमती सत्यवती – भीमगौंड़ा पाटील।
क्षुल्लक दीक्षा	–	ज्येष्ठ शु.13 वि.सं. 1972, ईस्वी 1915, उत्तूर ग्राम (कर्नाटक)।
ऐलक दीक्षा	–	गिरनारजी सिद्धक्षेत्र पर, भगवान नेमिनाथ के चरणों में पांचवी टोंक पर।
मुनि दीक्षा	–	फाल्गुन शु.14 वि.सं. 1976, ईस्वी 1920 यरनाल ग्राम कर्नाटक।
क्षु. एवं मुनि दीक्षा गुरु	–	मुनिश्री देवेन्द्र कीर्तिजी महाराज।
आचार्य पद	–	आश्विन शु.11 वि.सं. 1981, ईस्वी 1928 समडोली ग्राम में बुधवार के दिन, इसी दिन 2 मुनि दीक्षा एवं 1 ऐलक दीक्षा दी।

चारित्र चक्रवर्ती	–	वि.सं. 1994, ईस्वी 1937, गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में।
उत्तर भारत में मंगल विहार एवं वर्षायोग	–	तीर्थराज सम्मेद शिखरजी की वन्दनार्थ मार्गशीर्ष कृ. 1 वि.सं. 1984 ईस्वी सन् 1927 में।
	–	बम्बई के सेठ गेंदनमलजी संघपति की प्रार्थना पर।
	–	उत्तर भारत में सन् 1928 से 11 वर्षायोग सम्पन्न किये।
	–	संयमी जीवन में 35000 मील से अधिक पद विहार किया।
तप साधना	–	सिंहनिष्क्रीड़ित, कवलचन्द्रायण आदि अनेक व्रतों को करते हुए जीवन में कुल 9938 उपवास, रसपरित्याग इत्यादि बहिरंग और अंतरंग तप किये।
कुल वर्षायोग	–	अपने दीक्षित जीवन में 41 वर्षायोग सम्पन्न किये।
विशेष	–	सन् 1925 में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के सम्पन्न होने वाले 'महामस्तकाभिषेक' में सान्निध्य प्रदान किया। श्रवणबेलगोला से ही आप 'गुरुणांगुरु' कहे जाने लगे।
	–	जिनालय रक्षार्थ 3 वर्ष 12 दिन तक अन्न ग्रहण का त्याग कर धर्मरक्षा एवं संस्कृति की रक्षा की।

	–	ताड़पत्रों पर लिखित षट्खंडागम और महाबन्ध ग्रन्थों की कीटों से रक्षा हेतु उन ग्रन्थों को ताम्रपत्रों पर अंकित कराया।
	–	लगभग 8 लाख श्रावकों को मूलगुण सहित यज्ञोपवीत प्रदान की।
उत्कृष्ट सल्लेखना ग्रहण	–	24 अक्टूबर, वि.सं. 2008 में 12 वर्ष की उत्कृष्ट सल्लेखना गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर ग्रहण की।
स्वकीय आचार्यपद प्रदान	–	26 अगस्त 1955 को पत्र लिखाकर अपने प्रथम निर्ग्रन्थ शिष्य मुनिश्री वीरसागरजी को आचार्यपद प्रदान किया।
अंतिम उपदेश	–	8 सितम्बर, 1955 को 36 दिवसीय सल्लेखना के अन्तर्गत 26वें दिन 22 मिनिट तक मराठी भाषा में दिया।
सल्लेखना पूर्वक देहविलय	–	भाद्रपद शु.2, 18 सितम्बर 1955 को प्रातः 6 बजकर 50 मिनिट पर महाराष्ट्र प्रान्त के कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र पर सल्लेखना पूर्वक आपका देह विलय हुआ।

– आचार्य श्री शान्तिसागरजी स्तुति –

प्रथमाचार्य रत्नत्रयधारी
दोषनिवारक अतिबलशाली
आगमरतम् संयमधारी
जो ध्यावे वो भाग्यशाली

– शांति सागरम्
– शांति सागरम्

दिगम्बरमुद्रा निश्चयकारी
असंभव को भी संभवकारी
बुद्धिप्रदाता, सम्यक्धारी
जो ध्यावे वो भाग्यशाली

– शांति सागरम्
– शांति सागरम्

पथनिर्माता, उपसर्गधारी
संकट में भी अहिंसाकारी
आत्मचिंतक निश्छ्लधारी
जो ध्यावे वो भाग्यशाली

– शांति सागरम्
– शांति सागरम्

आओ
शान्ति मार्ग पर
चलें